ओ३म्

प्यारा ऋषि

महर्षि दयानन्द सरस्वती

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जीवन की प्रेरणाप्रद घटनाओं पर आधारित चित्रकथाएँ

ओ३म्

जीवन को सफल बनाने के 10 स्वर्णिम सूत्र

जन्म से ही कोई महान् नहीं बनता; और पैदा होने मात्र से कोई सफल नहीं होता। अपितु अपने श्रेष्ठ गुण, कर्मों से ही कोई मनुष्य महान् बन पाता है और अपने जीवन को सफल बना लेता है। शास्त्रों के अनुसार ऐसे 10 दिव्य गुण 'स्वर्णिम सूत्रों' के रूप में यहाँ बताये जा रहे हैं।

1. **धृति** – धैर्य रखना। कठिन परिस्थितियों में भी विचलित न होना, स्थिर रहना।
2. **क्षमा**– क्षमा करना। मन में बदले की भावना न रखना।
3. **दम**– मन का नियन्त्रण। मन का गुलाम न बन कर मन को अपने वश में रखना।
4. **अस्तेय**– चोरी न करना। मन से, वाणी से और कर्म से कभी चोरी न करना।
5. **शौचम्**– पवित्रता। जल आदि से शरीर की पवित्रता और साधना से मन आदि की पवित्रता।
6. **इन्द्रिय निग्रह**– दसों इन्द्रियों का नियन्त्रण। विचार पूर्वक दसों इन्द्रियों को अपने वश में रखना।
7. **धी**– बुद्धि। सात्विक आचार–विचार से बुद्धि का विकास करना और उसका केवल सदुपयोग ही करना।
8. **विद्या**– यथार्थ ज्ञान, सत्यविद्या को प्राप्त करना और उसका विस्तार करना।
9. **सत्य**– सत्य आचरण। सदा सत्य का ग्रहण करना और असत्य को त्यागना।
10. **अक्रोध**–क्रोध न करना। भावनाओं पर नियन्त्रण पाकर क्रोध न करना। सदा शान्त रहना।

ये हैं वे स्वर्णिम सूत्र (धर्म के 10 लक्षण) जिनके द्वारा मनुष्य महान् और सफल बनता है। इस कॉमिक्स में वर्णित सभी महान् पुरुषों में पग–पग पर आप इन स्वर्णिम गुणों को पायेंगे।

इन महापुरुषों के जीवन से प्रेरणा लेकर, इनके अनुकरण से हम भी महान् और सफल बन सकते हैं। और इनके समान राष्ट्र व समाज की सेवा कर सकते हैं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी संसार में एक ऐसे विलक्षण महापुरुष हुए हैं जिनके जीवन का पल–पल प्रेरणा दायक है। उन्होंने अपना जीवन संसार के उपकार के लिए अर्पित कर दिया था– उनके जीवन की अनेक ऐसी घटनाएँ हैं, जो व्यक्ति को जीवन–निर्माण की सतत् प्रेरणा देती हैं। अतएव बच्चों, आप इन्हें पढ़कर–इन्हें जानकर अपने जीवन में उन्नति के मार्ग पर चलकर देश के सच्चे नागरिक बन सकें, इसी भावना के साथ इस कॉमिक्स को प्रकाशित किया जा रहा है। आप पहले अपने आप पढ़ें तथा फिर अपने मित्रों को भी अवश्य पढ़ाएं।

पटकथा- संवाद- चित्रांकन
भारत मकवाना
संशोधन
रामनिवास 'गुणग्राहक'
(प्यारा ऋषि)
गाली देने वाले पर दया
एक बार स्वामीजी कानपुर में प्रवचन कर रहे थे और श्रद्धालु भक्तगण श्रद्धापूर्वक सुन रहे थे। उनमें एक व्यक्ति ऐसा भी था जो नियमपूर्वक स्वामीजी के प्रवचन स्थल पर पहुँच कर गालियाँ दिया करता था।
ओ३म्
सत्यार्थ प्रकाश

ईश्वर का मुख्य नाम **ओ३म्** है! वह सच्चिदानन्द स्वरूप है।
यह स्वामी नहीं, बहुत बड़ा ढोंगी है। इसे कोई ज्ञान-योग नहीं आता, केवल लोगों को मूर्ख बनाना आता है।
ओ३म्
वेद
स्वामीजी उस व्यक्ति की बातों पर कोई ध्यान न देकर सुना- अनसुना कर दिया करते थे।

बच्चों ! क्षमा करना एक महान् गुण है। इसलिए जीवन में क्षमा करना सीखो और महान् बनो।

पटकथा- संवाद- चित्रांकन
भारत मकवाना

स्वदेशी ही वस्तु अपनाने में शोभा

एक बार स्वामी जी अलीगढ़ में प्रवचन दे रहे थे। तभी 'ठाकुर ऊधोसिंह' छावला निवासी अपने पिता ठाकुर भूपाल सिंह के साथ स्वामीजी के दर्शन करने आये। उस दिन ऊधोसिंह के वस्त्र नये ढंग के थे और सब के सब विलायती कपड़ो के बने थे। यह देख स्वामीजी बोले–

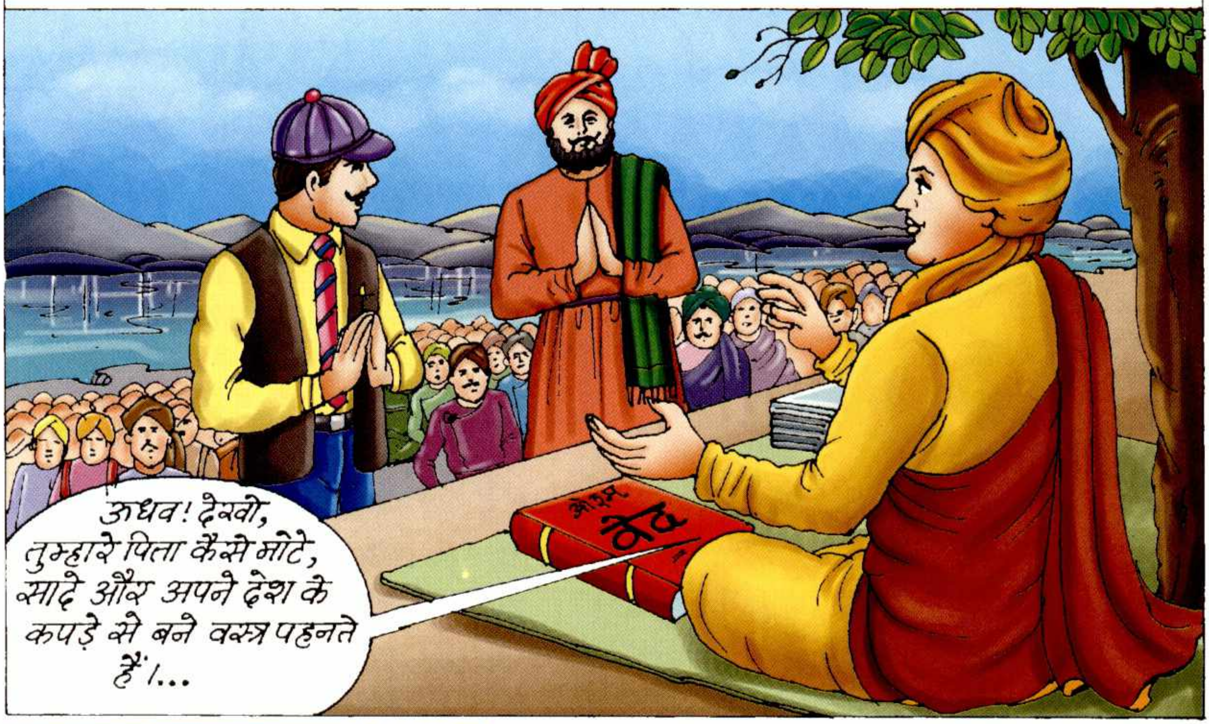

स्वदेशी की प्रबल भावना के बिना हम अपने देश को सबल नहीं बना सकते। मनुष्य की शोभा स्वदेशी भावना और उत्तम सदाचार से होती है।

पटकथा-संवाद-चित्रांकन
भारत मकवाना

जहर देने वाले की कैद से मुक्ति

स्वामीजी सभी वर्ग के लोगों के बीच समान रूप से उठते-बैठते थे। इसमें पंडित व समाज के अन्य लोग 'स्वामी दयानन्द सरस्वती जी से बेहद क्रोधित थे।

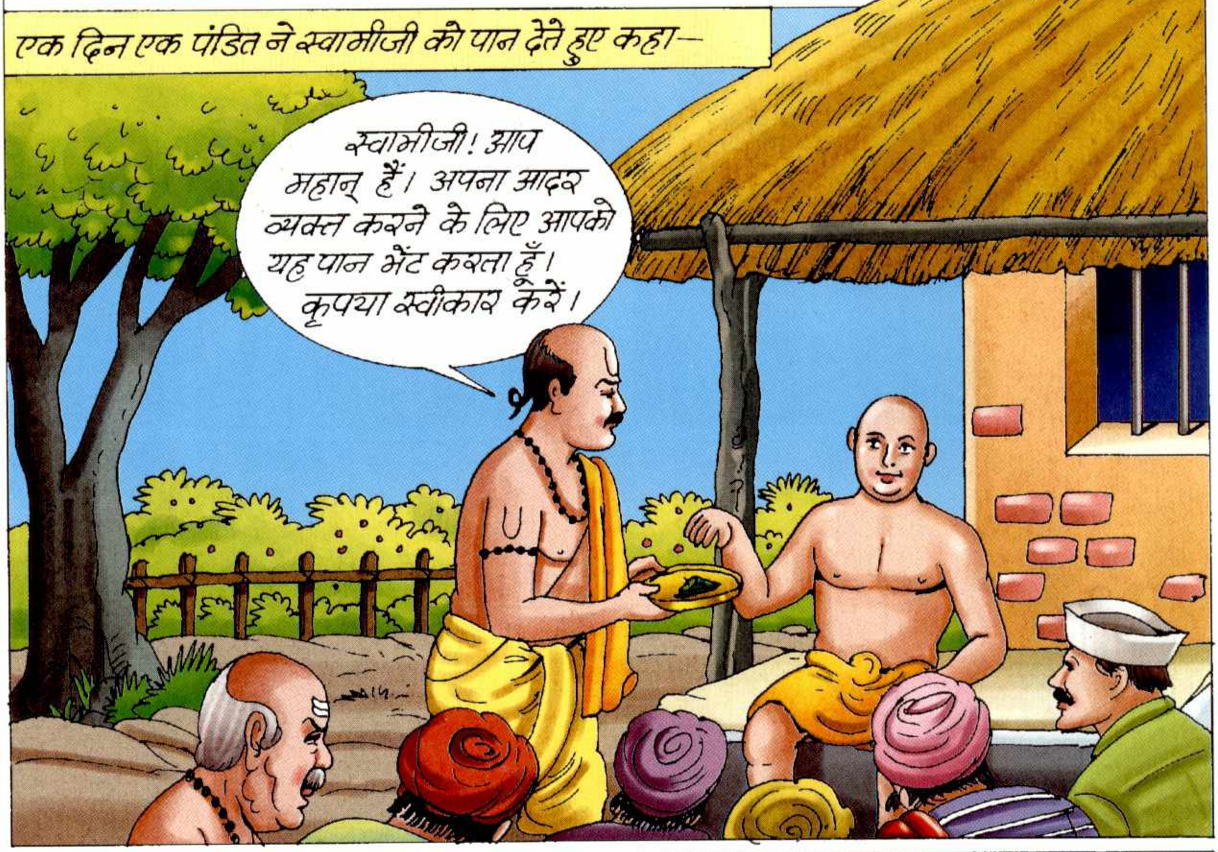

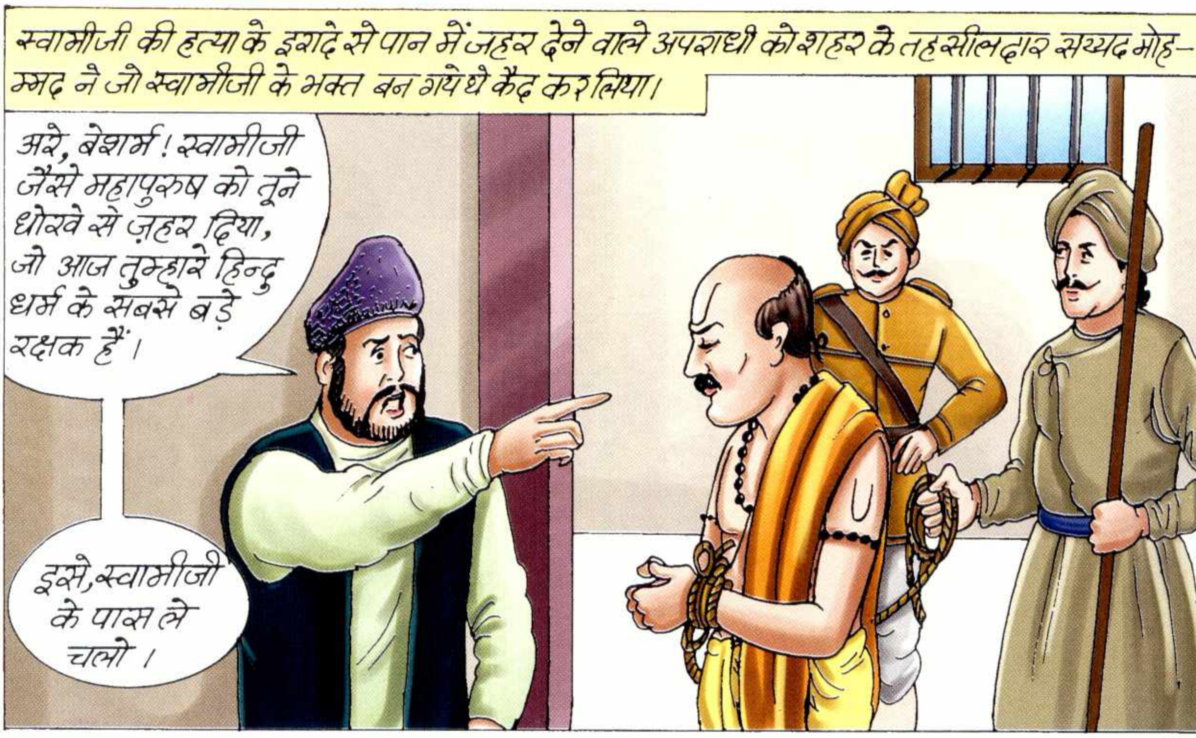

बच्चों ! महर्षि की महानता देखो कि विष देने वालों से भी बदले की भावना नहीं रखते। हमें भी किसी से बदले की भावना नहीं रखनी चाहिए।

पटकथा-संवाद-चित्रांकन
भारत मकवाना
उपासना धर्म का निरादर
एक दिन स्वामीजी आर्य समाज के साप्ताहिक सत्संग में पहुँचे, उस समय उपासना हो रही थी। स्वामीजी को आता देखकर...
ओ३म्
आर्य समाज सत्संग सभा (लाहौर)
...सभी सत्संगी स्वामीजी के सम्मान में खड़े हो गये।
उपासना की समाप्ति पर स्वामीजी ने उपदेश दिया कि–
ओ३म्
लाहौर
ईश्वर की उपासना में उपासक, **ध्यान** में मग्न होते हैं। ऐसे समय में कोई कितना ही बड़ा मनुष्य आये...

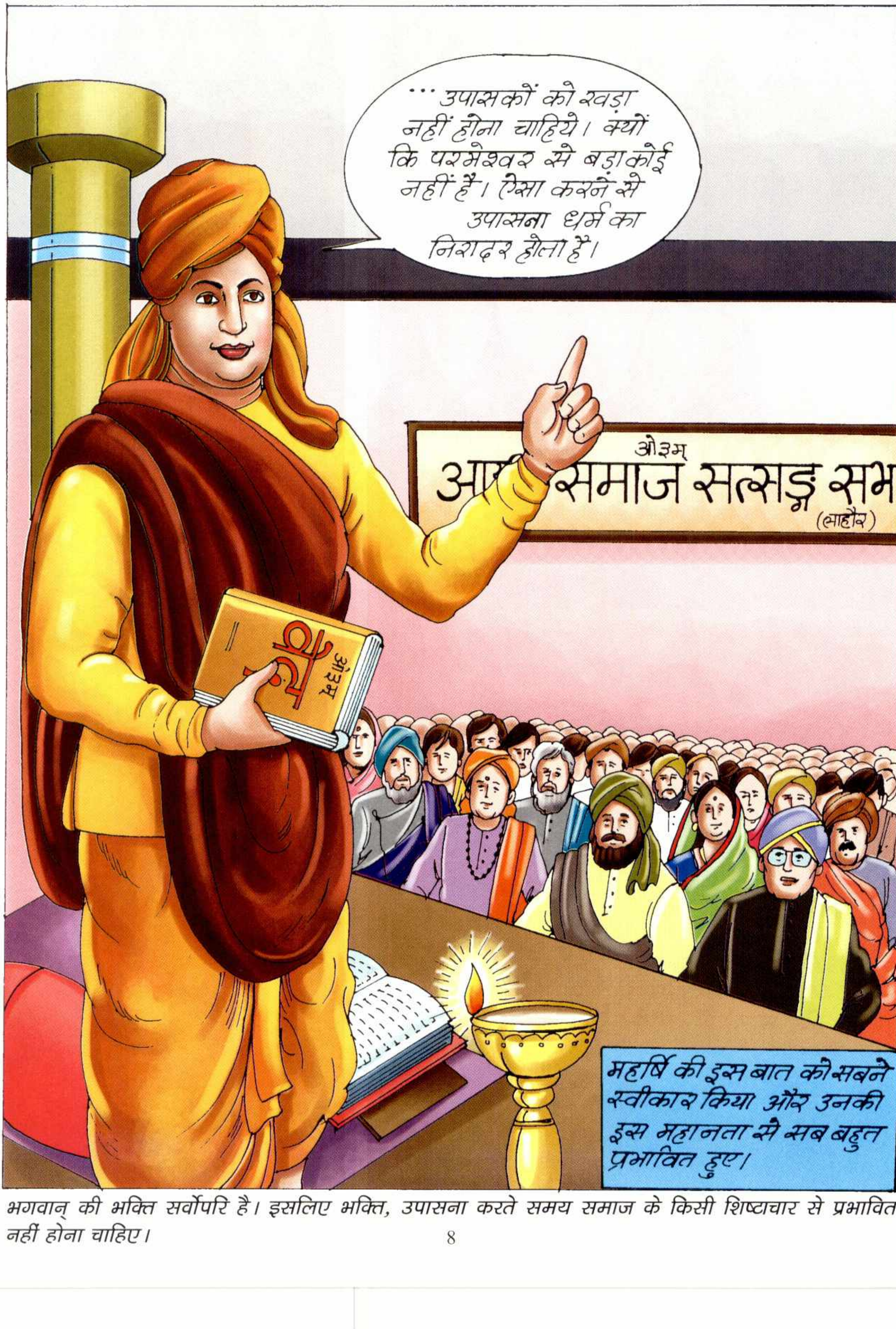

भगवान् की भक्ति सर्वोपरि है। इसलिए भक्ति, उपासना करते समय समाज के किसी शिष्टाचार से प्रभावित नहीं होना चाहिए।

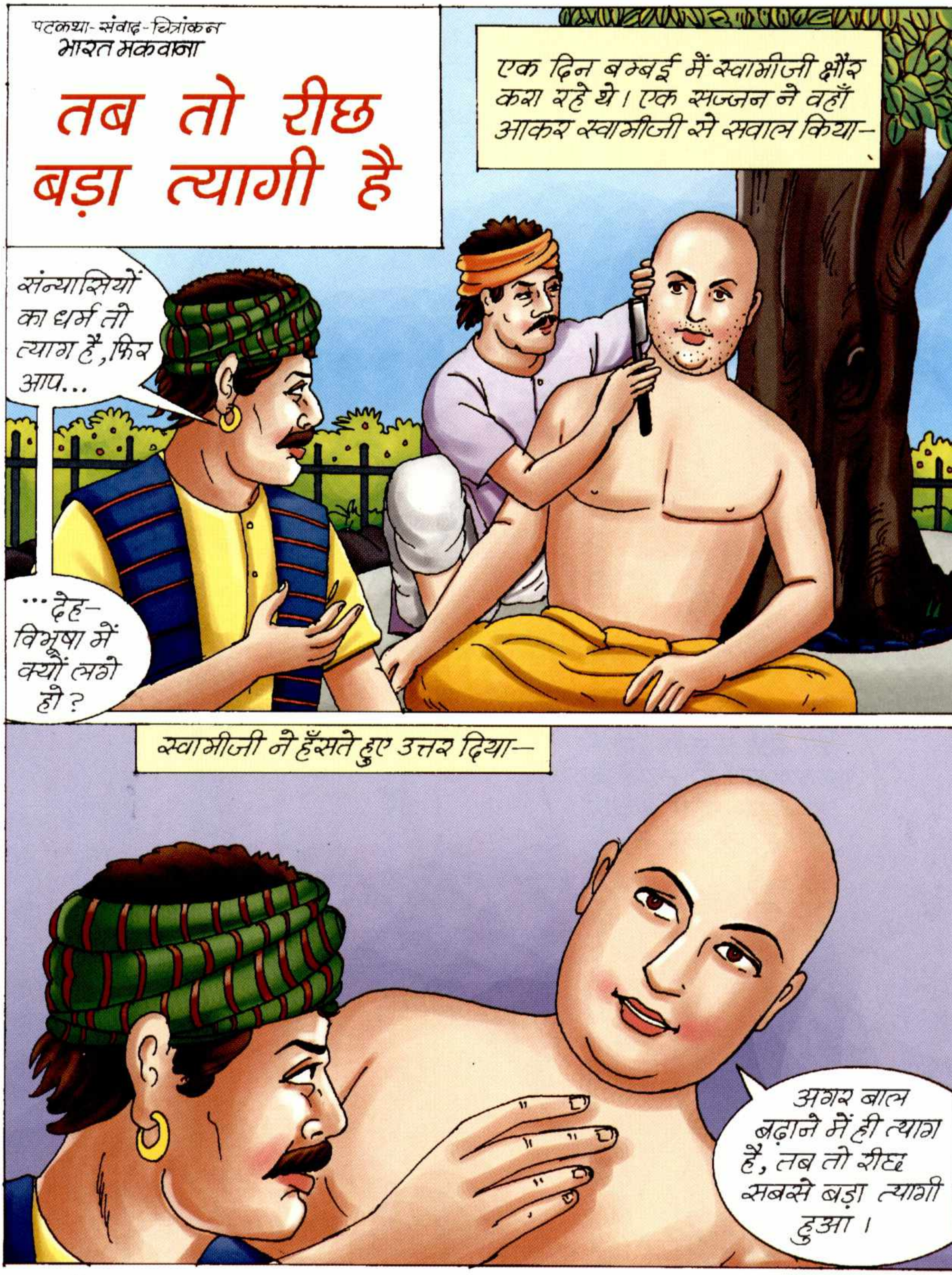
पटकथा-संवाद-चित्रांकन
भारत मकवाना
तब तो रीछ बड़ा त्यागी है
एक दिन बम्बई में स्वामीजी क्षौर करा रहे थे। एक सज्जन ने वहाँ आकर स्वामीजी से सवाल किया–
संन्यासियों का धर्म तो त्याग हैं, फिर आप...
...देह-विभूषा में क्यों लगे हो?
स्वामीजी ने हँसते हुए उत्तर दिया–
अगर बाल बढ़ाने में ही त्याग हैं, तब तो रीछ सबसे बड़ा त्यागी हुआ।

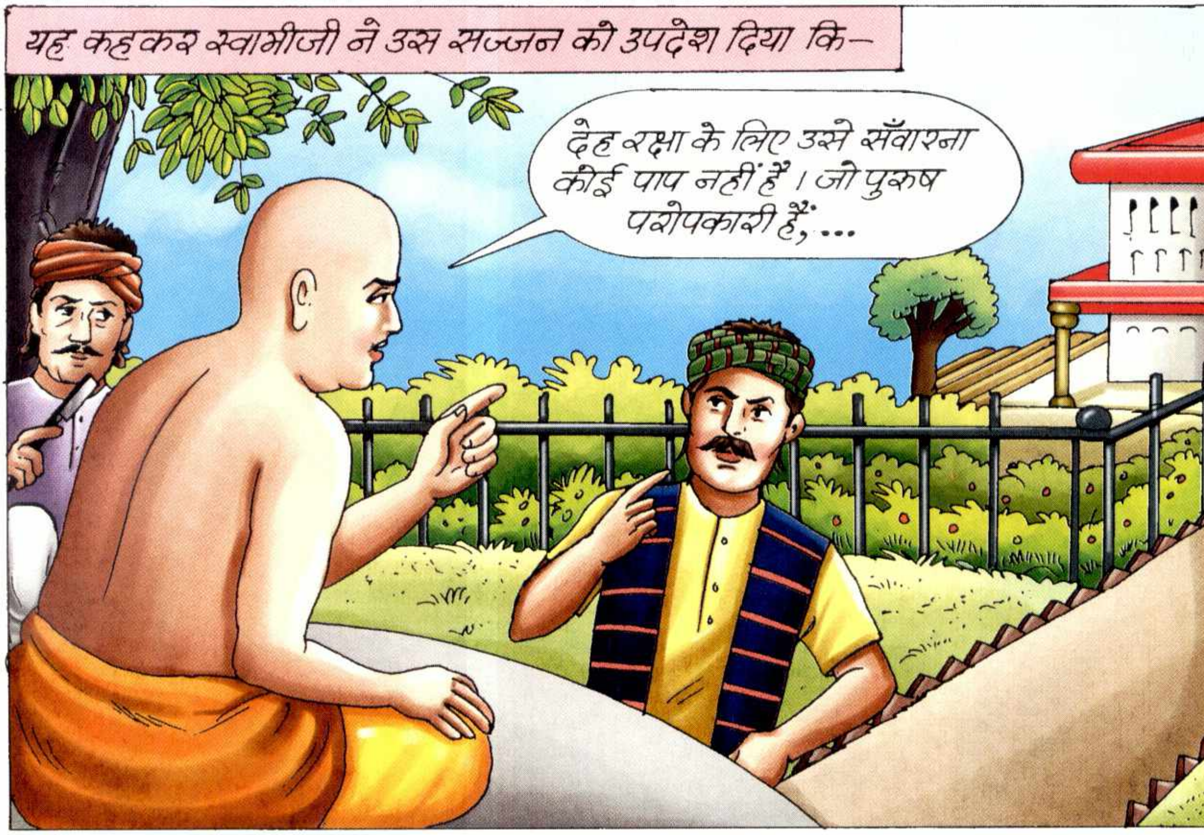

बाहरी दिखावे के धार्मिक चिन्ह मनुष्य को सच्चा धार्मिक नहीं बनाते। शरीर धर्म का साधन है। शरीर को स्वस्थ एवं सबल रखने से ही धर्म का पालन हो सकेगा।

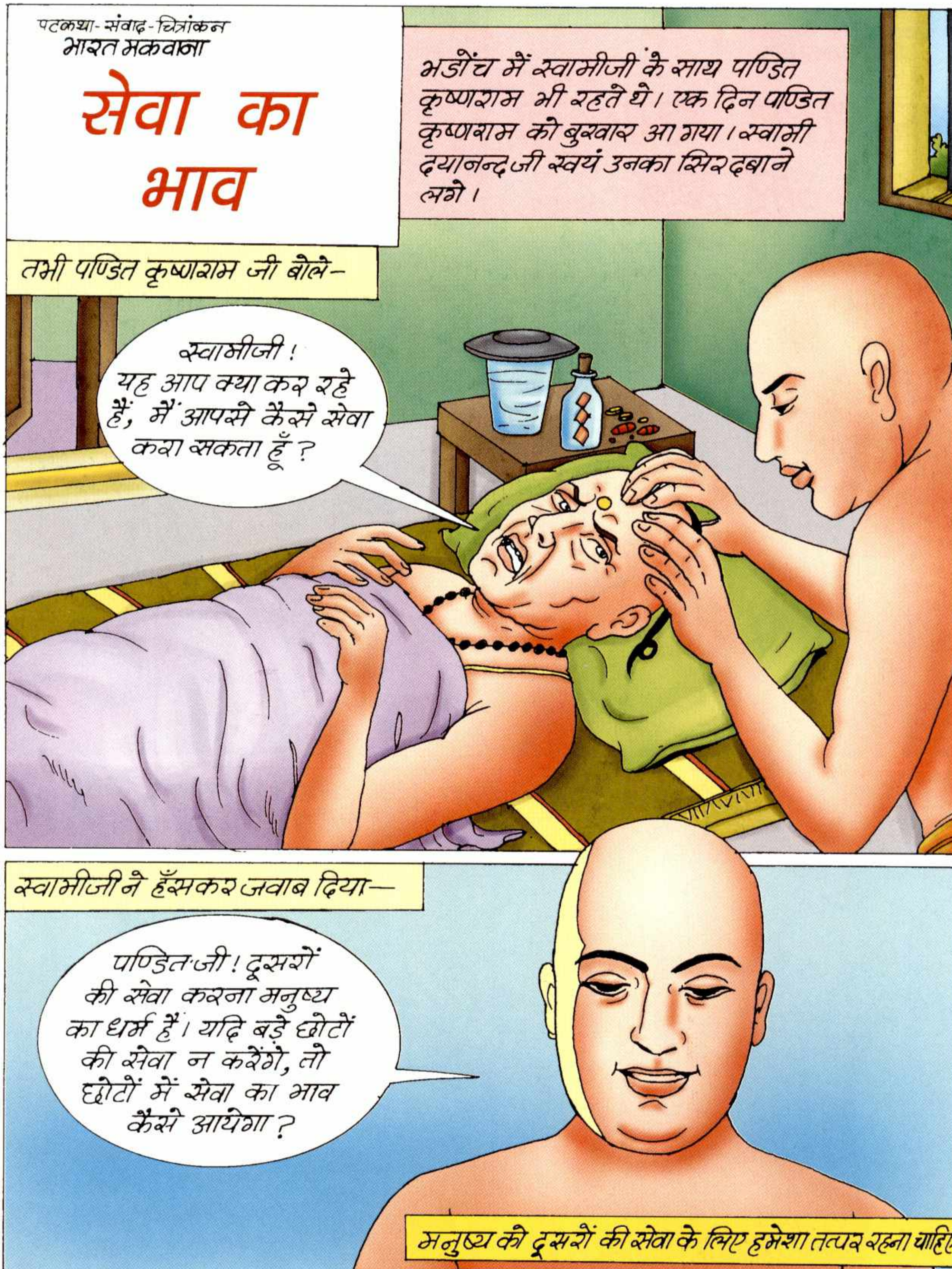

बच्चों! सेवा करना मनुष्य का एक महान् गुण है। सेवा करने से कोई छोटा नहीं होता, बल्कि वह महान बनता है। इसलिए सबकी सेवा करनी चाहिए।

पटकथा-संवाद-चित्रांकन
भारत मकवाना

सर सय्यद अहमद खां और हवन

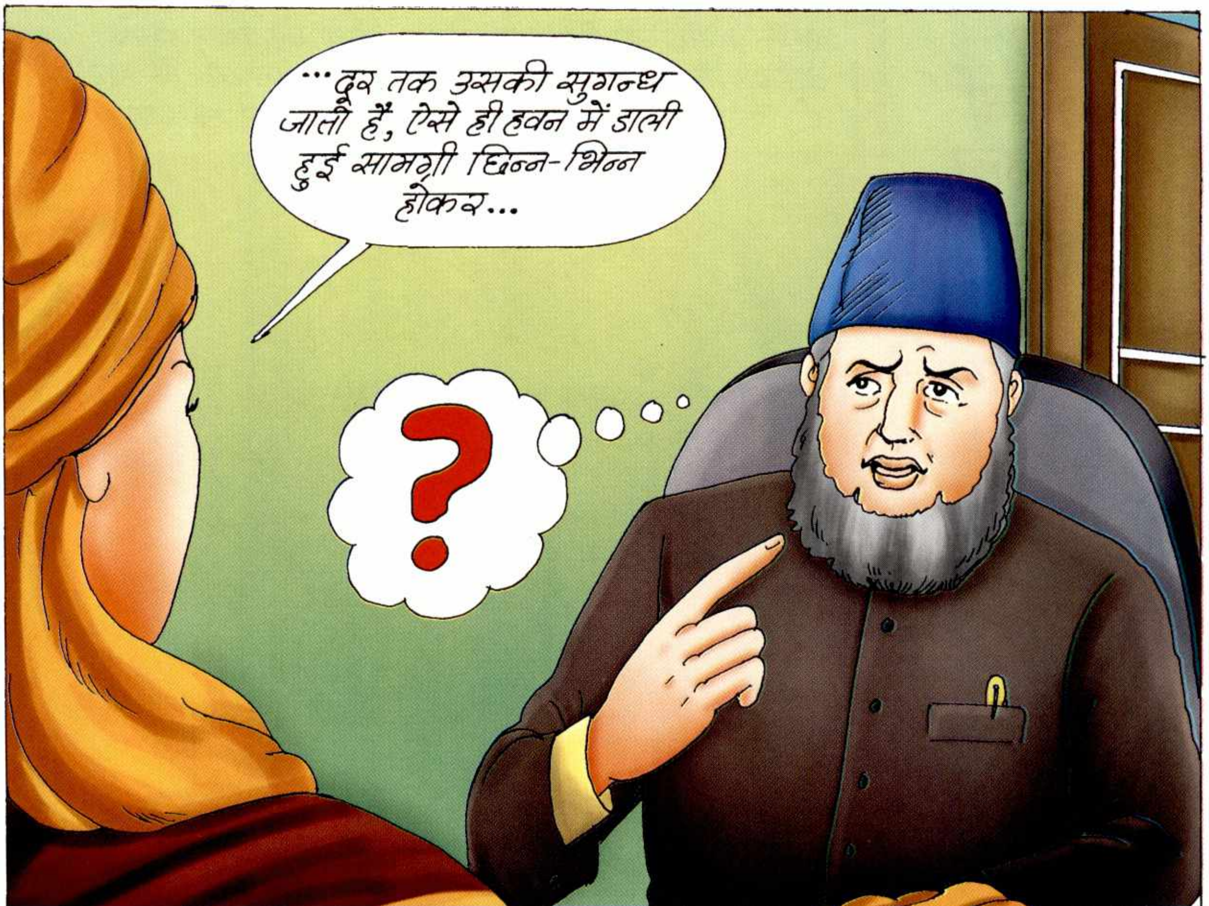

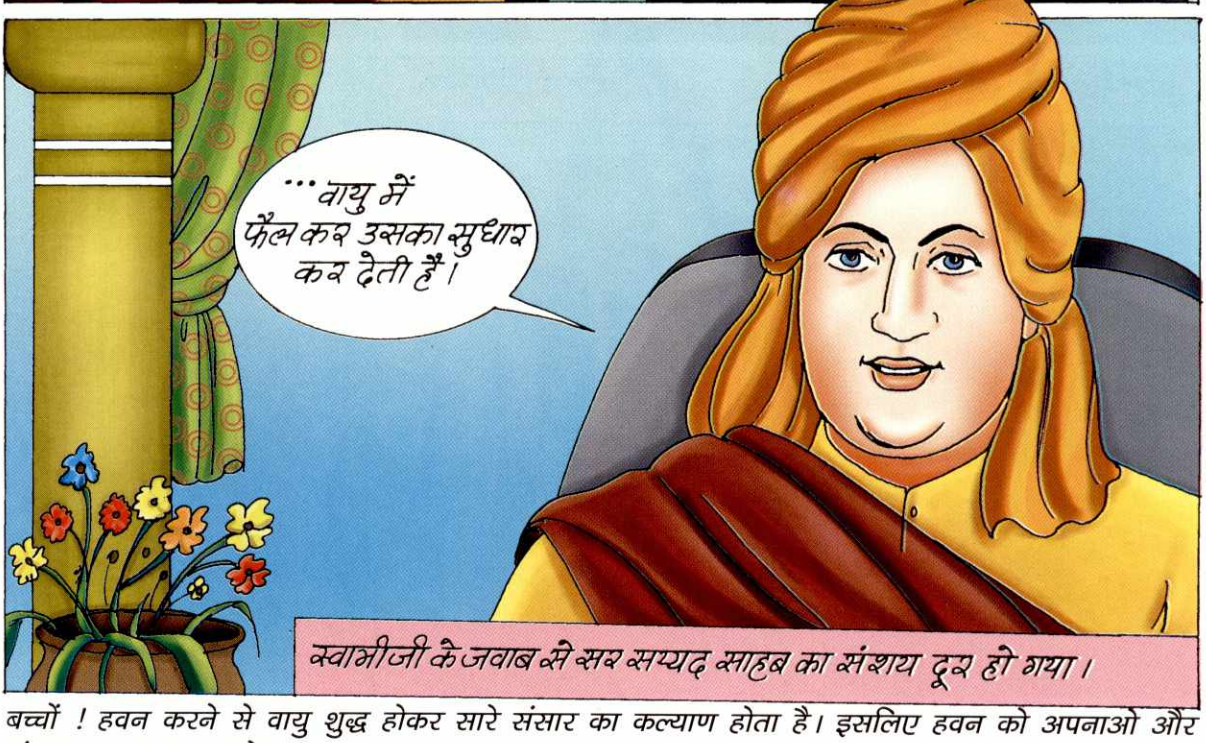

बच्चों ! हवन करने से वायु शुद्ध होकर सारे संसार का कल्याण होता है। इसलिए हवन को अपनाओ और संसार का कल्याण करो।

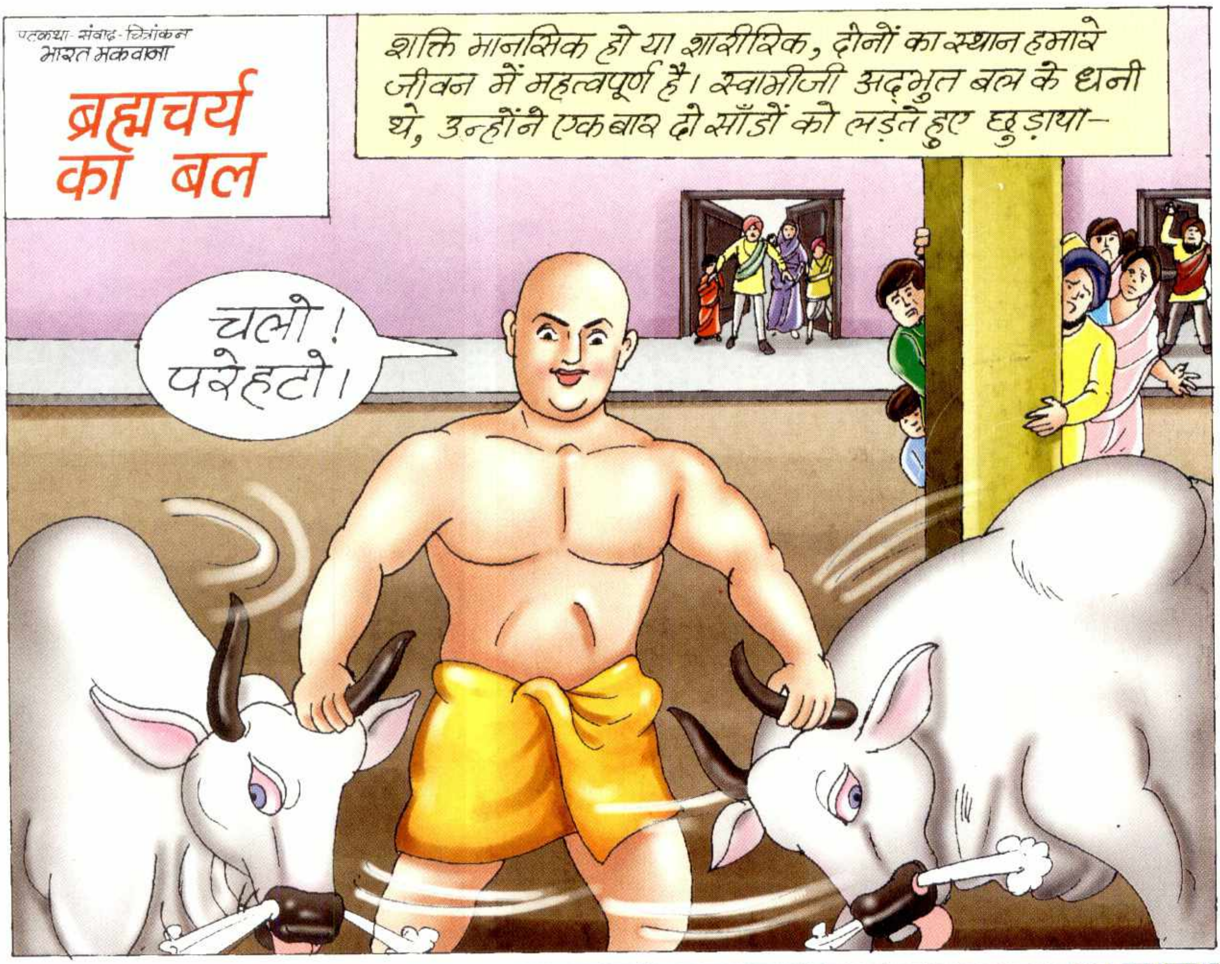

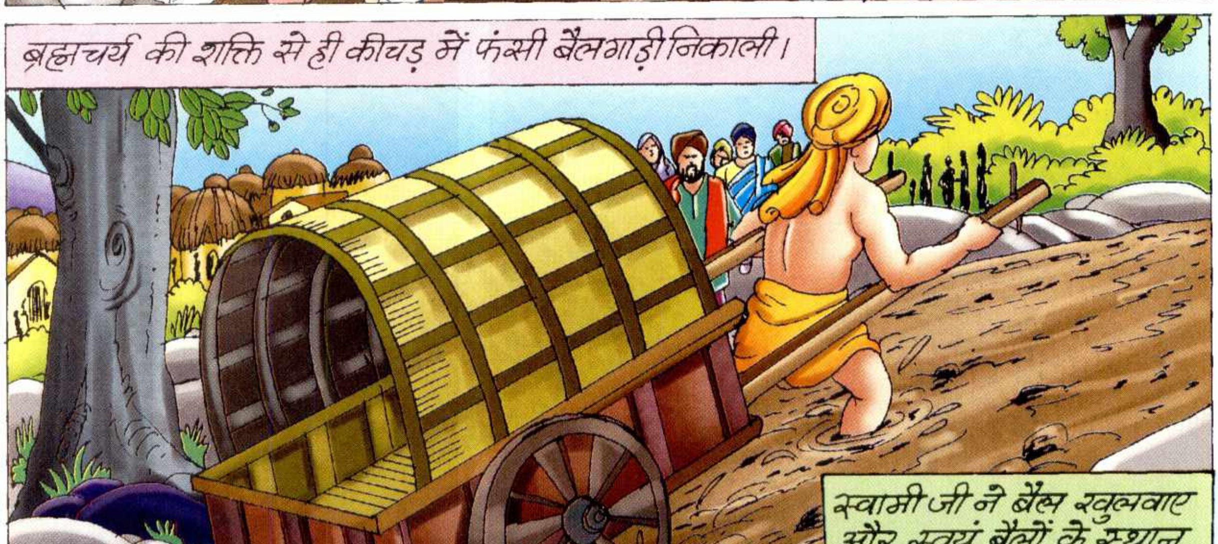

हम जो भोजन करते हैं, उससे रस, रक्त माँस आदि के बाद अन्तिम धातु वीर्य बनती है। उसकी रक्षा करना ही ब्रह्मचर्य है। ब्रह्मचर्य से शारीरिक व मानसिक शक्ति का विकास होता है। देखो महर्षि की अद्भुत ताकत।

पटकथा-संवाद-चित्रांकन
भारत मकवाना

ईंट मारने वालों को लड्डू

व्याख्यान रात्रि के आठ बजे समाप्त हुआ करता था । जब थोड़ा अँधेरा होने लगा तब अध्यापक का संकेत पाकर बालक स्वामीजी पर ईंट, रोड़े और पत्थर फेंकने लगे ।
अमृतसर
सभा में हल-चल मच गई ।

स्वामीजी ने खड़े होकर सब को शान्त कर दिया ।
शान्त हो जाओ। शान्त हो जाओ।।

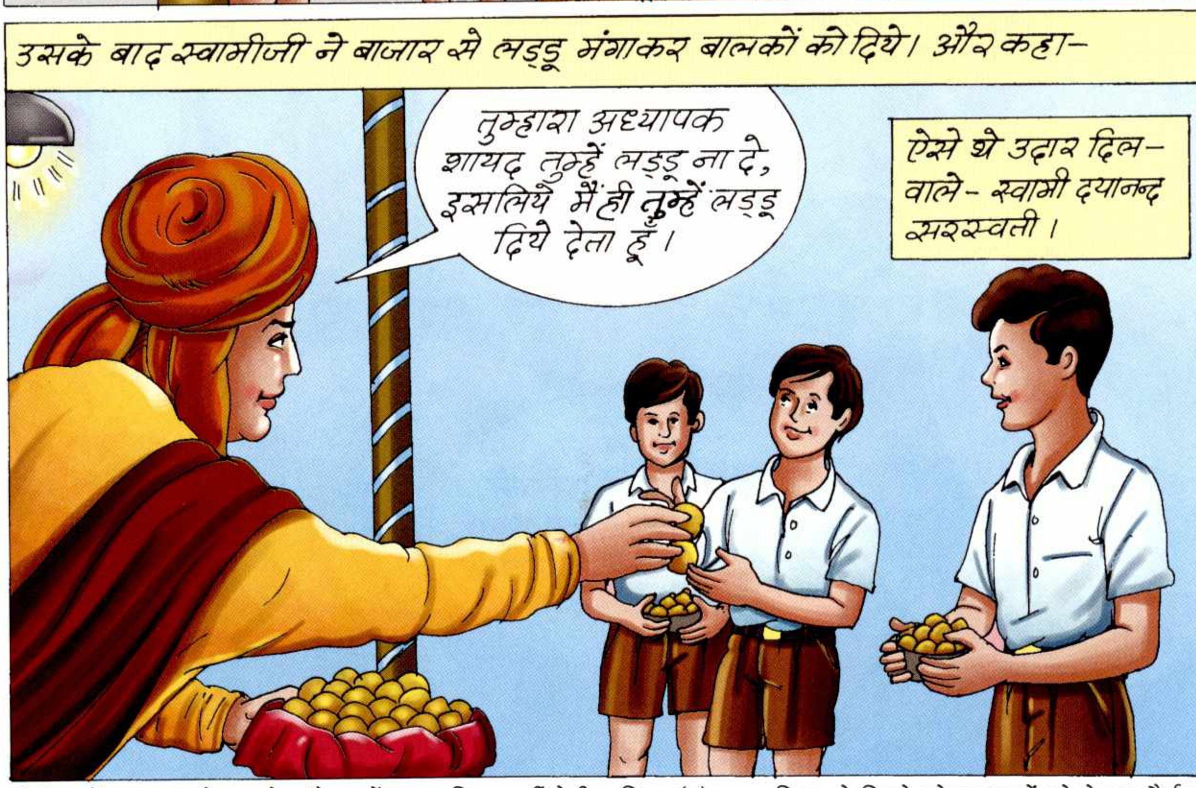

(1) बच्चों का मन कोमल होता है। उन्हें गलत शिक्षा नहीं देनी चाहिए। (2) गलत शिक्षा से बिगड़े कोमल बच्चों को प्रेम व धैर्य से अच्छी शिक्षा देकर उन्हें सुधारना चाहिए।

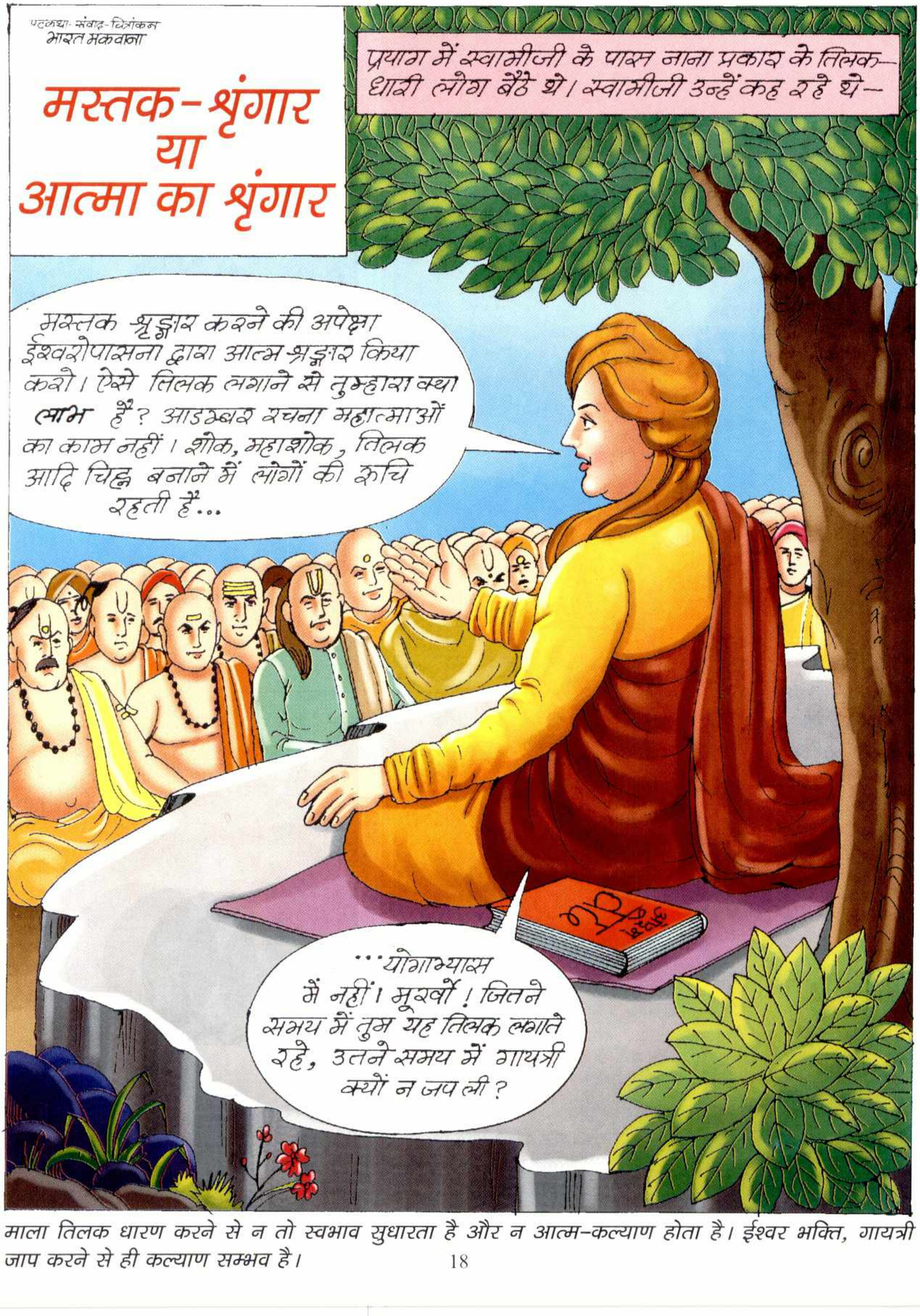

माला तिलक धारण करने से न तो स्वभाव सुधारता है और न आत्म–कल्याण होता है। ईश्वर भक्ति, गायत्री जाप करने से ही कल्याण सम्भव है।

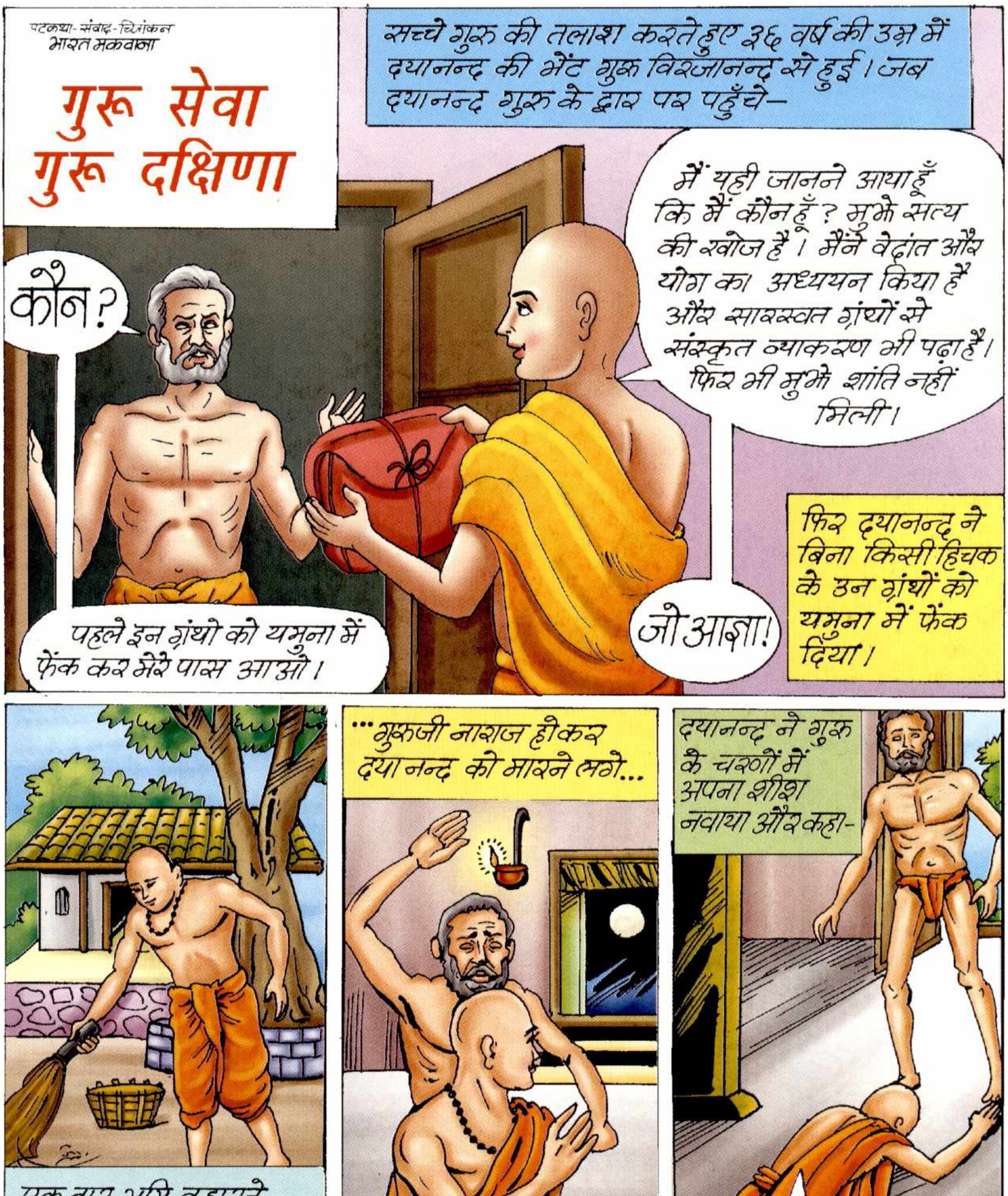
पटकथा-संवाद-चित्रांकन
भारत मकवाना
गुरू सेवा गुरू दक्षिणा
सच्चे गुरु की तलाश करते हुए ३६ वर्ष की उम्र में दयानन्द की भेंट गुरु विरजानन्द से हुई। जब दयानन्द गुरु के द्वार पर पहुँचे–
कौन?
मैं यही जानने आया हूँ कि मैं कौन हूँ? मुझे सत्य की खोज है। मैंने वेदांत और योग का अध्ययन किया है और सारस्वत ग्रंथों से संस्कृत व्याकरण भी पढ़ा है। फिर भी मुझे शांति नहीं मिली।
पहले इन ग्रंथो को यमुना में फेंक कर मेरे पास आओ।
जो आज्ञा!
फिर दयानन्द ने बिना किसी हिचक के उन ग्रंथों को यमुना में फेंक दिया।
एक बार भूमि बुहारते दयानन्द से कुछ कचरा रह गया और गुरुजी का पैर उस कचरे पर पड़ गया...
...गुरुजी नाराज होकर दयानन्द को मारने लगे...
...वे बिना बुरा माने गुरु की मार सहते रहे।
दयानन्द ने गुरु के चरणों में अपना शीश नवाया और कहा-
गुरुजी! मुझे मारने से आपको जो पीड़ा हुई उसके लिए क्षमा चाहता हूँ।

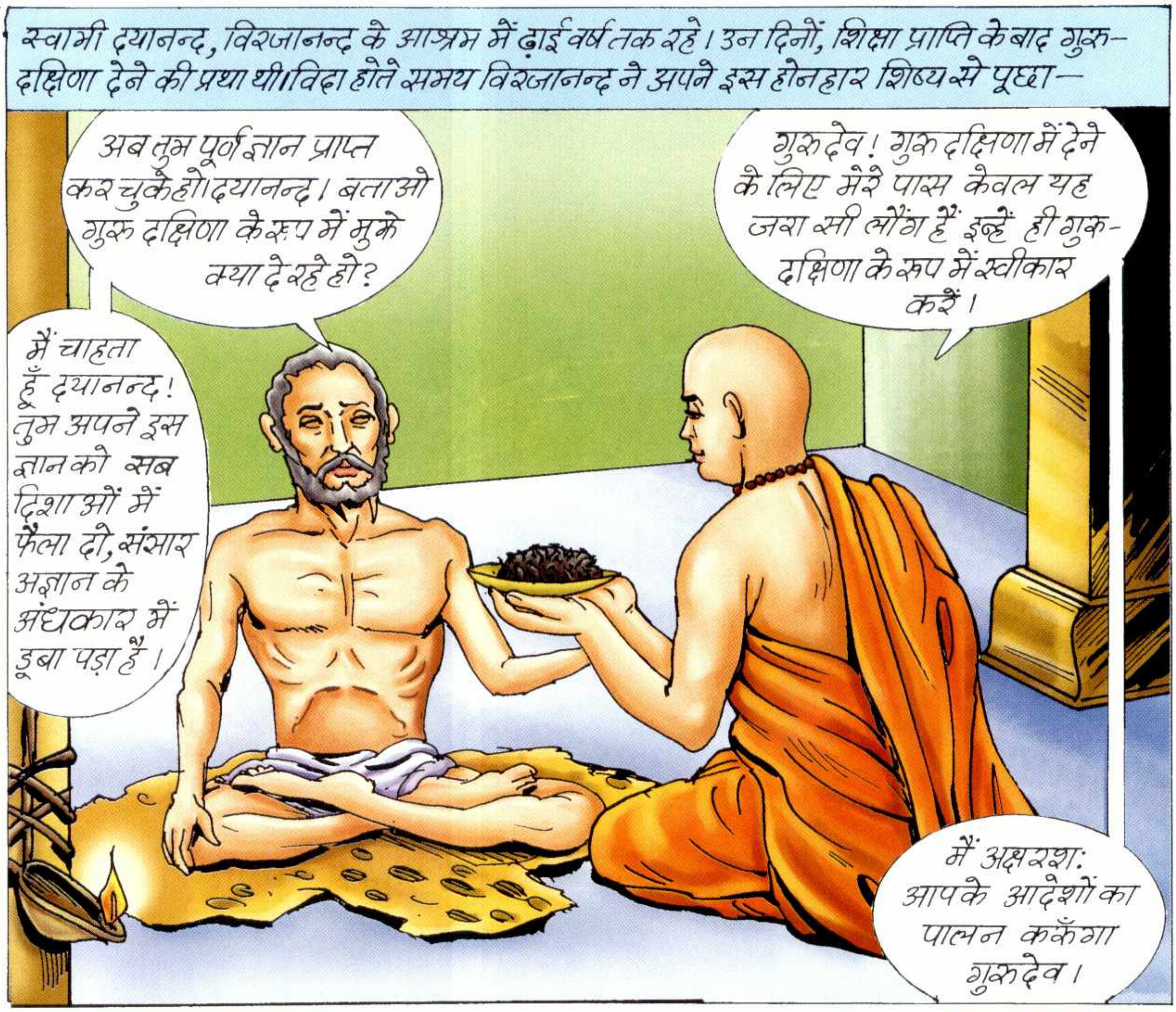

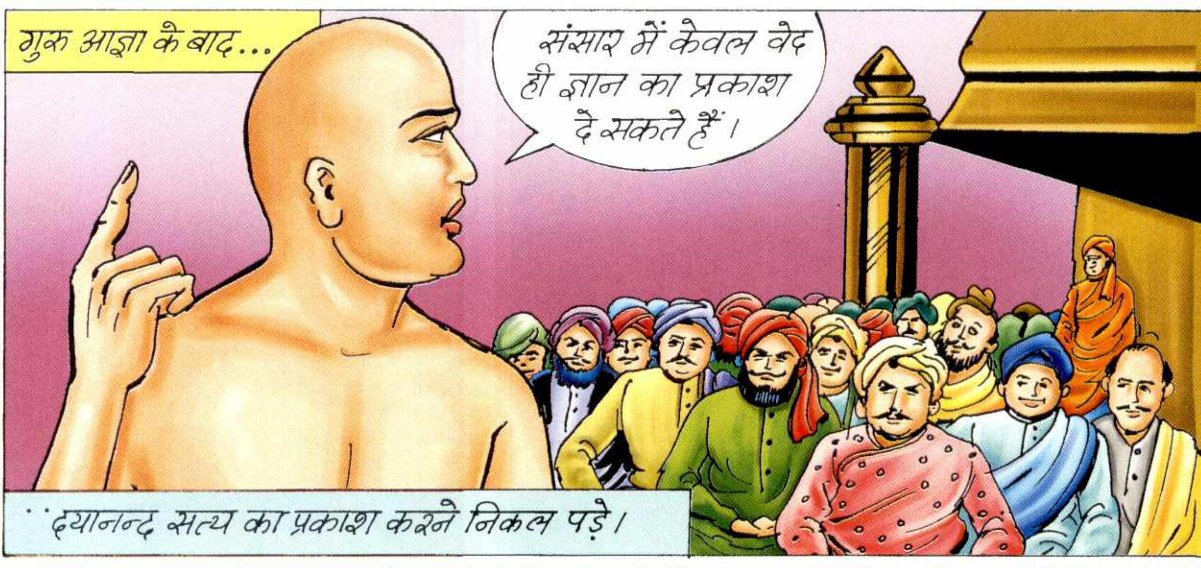

बच्चों ! माता-पिता और गुरु हमारी भलाई के लिए ही हमें डाँट व ताड़ना देते हैं। इसलिए उनकी बात का कभी बुरा नहीं मानना चाहिए।

पटकथा- संवाद- चित्रांकन
भारत मकवाणा

मूर्ति पूजा पाखण्ड है।

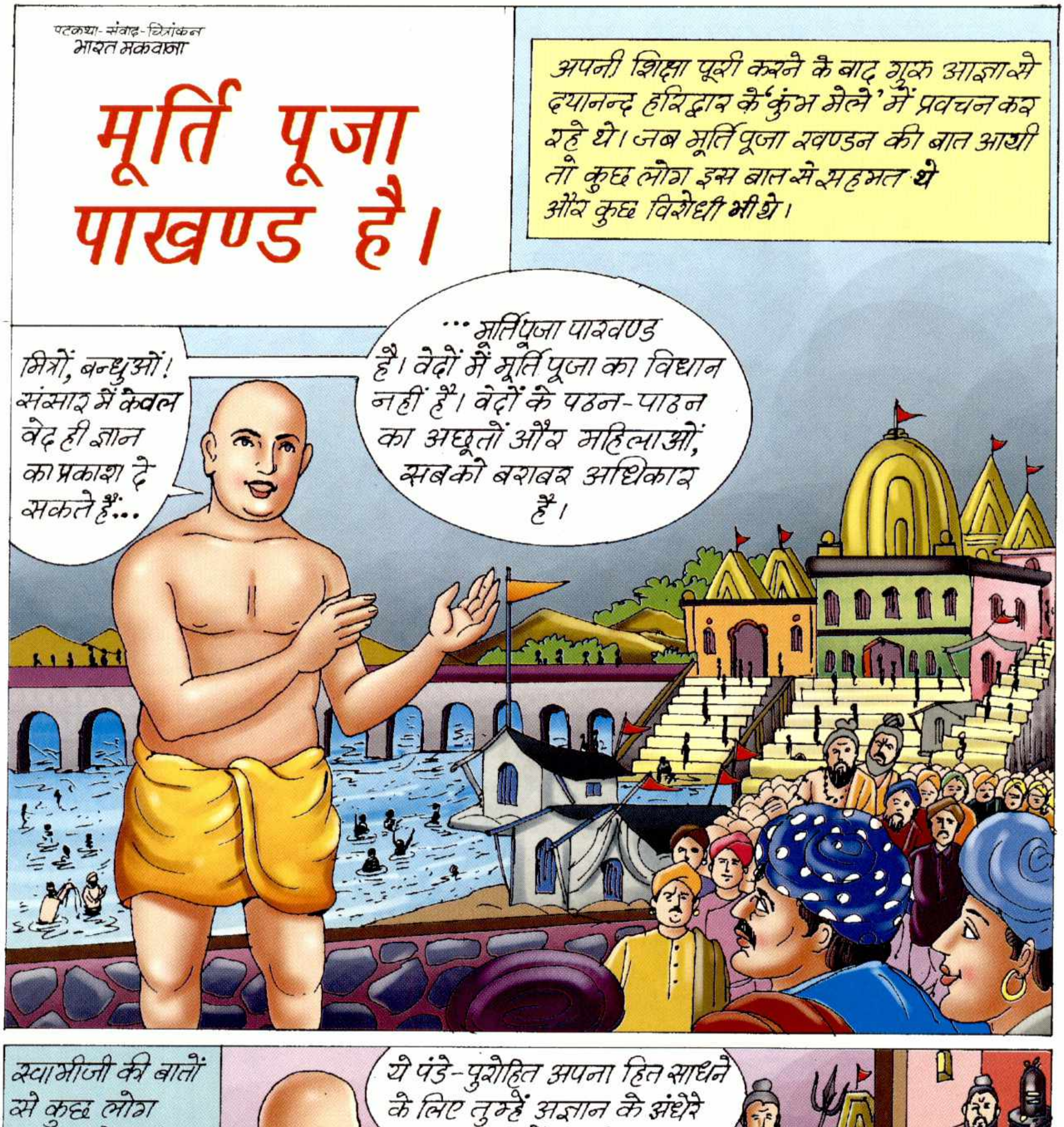

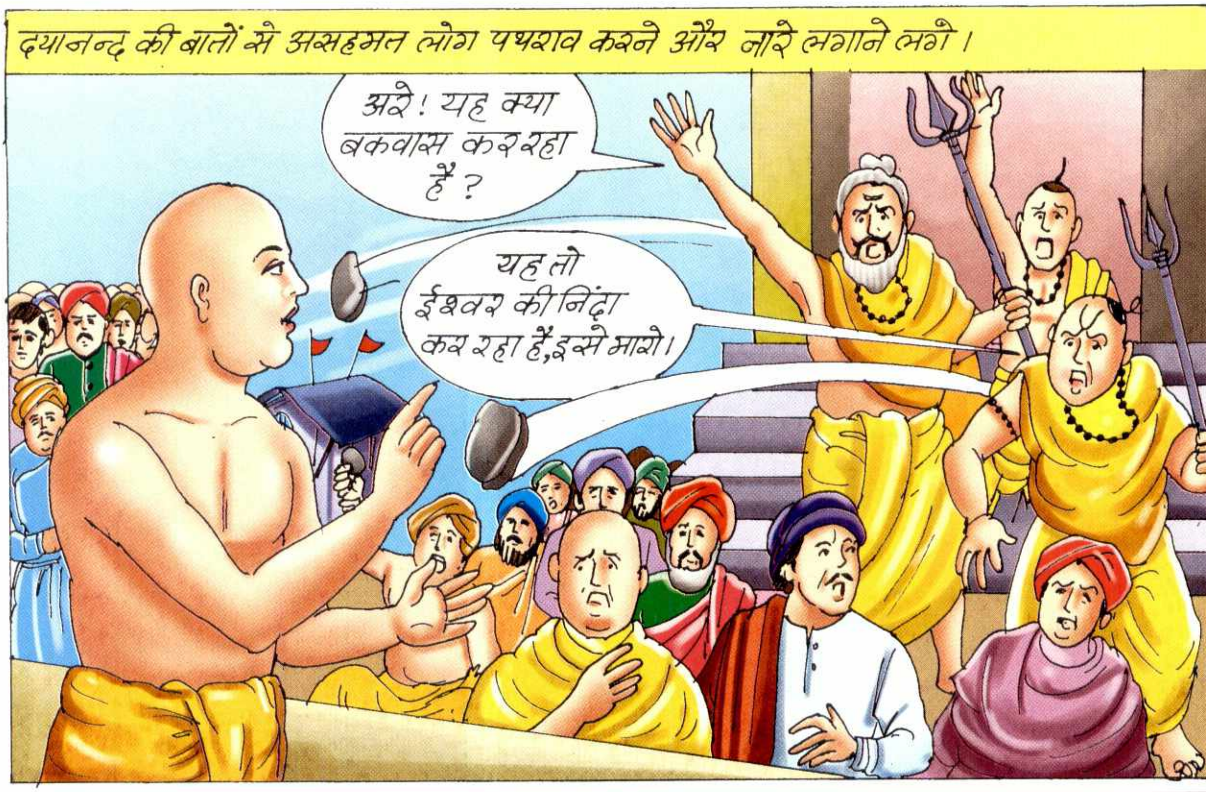

सत्य बोलने से झूठे धन्धे चलाने वालों की हानि होती है और वे उपद्रव करते हैं। मूर्तिपूजा का विधान वेदों में नहीं है। सत्य बोलने वालों को कष्टों से नहीं डरना चाहिए।

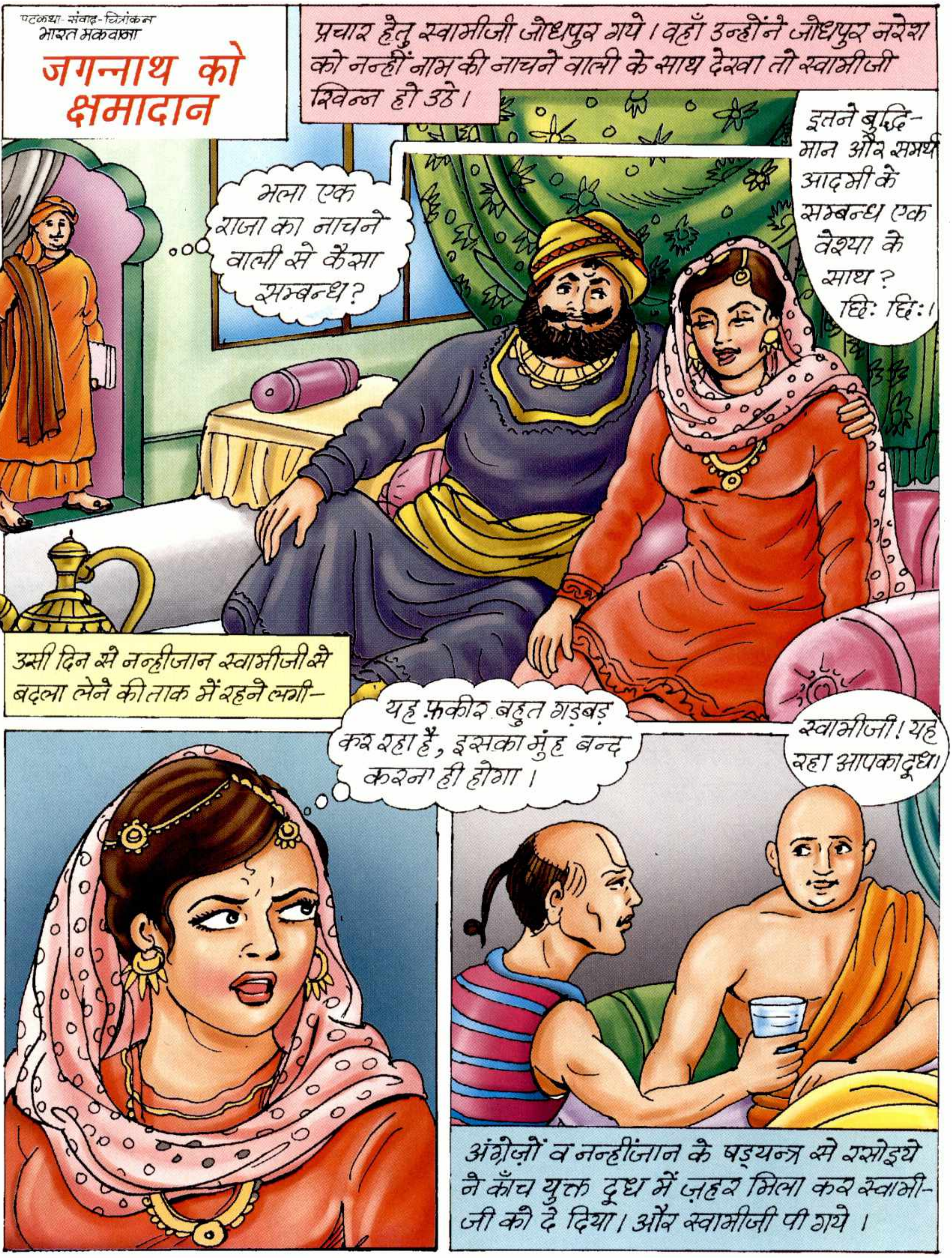
पटकथा- संवाद- चित्रांकन
भारत मकवाणा
जगन्नाथ को क्षमादान
प्रचार हेतु स्वामीजी जोधपुर गये। वहाँ उन्होंने जोधपुर नरेश को नन्हीं नाम की नाचने वाली के साथ देखा तो स्वामीजी खिन्न हो उठे।
भला एक राजा का नाचने वाली से कैसा सम्बन्ध?
इतने बुद्धिमान और समर्थ आदमी के सम्बन्ध एक वेश्या के साथ? छिः छिः।
उसी दिन से नन्हीजान स्वामीजी से बदला लेने की ताक में रहने लगी–
यह फ़कीर बहुत गड़बड़ कर रहा है, इसका मुंह बन्द करना ही होगा।
स्वामीजी! यह रहा आपका दूध।
अंग्रेज़ों व नन्हींजान के षड्यन्त्र से रसोइये ने काँच युक्त दूध में ज़हर मिला कर स्वामीजी को दे दिया। और स्वामीजी पी गये।

स्वामीजी के दूध में ज़हर मिला कर जगन्नाथ द्वारा पिला देने पर स्वामीजी के पेट में भयंकर दर्द होने लगा। प्रातः काल डॉ॰ अलीमर्दान खाँ ने इंजेक्शन व अन्य दवाओं के द्वारा स्वामीजी के शरीर में और विष प्रवेश करा दिया।

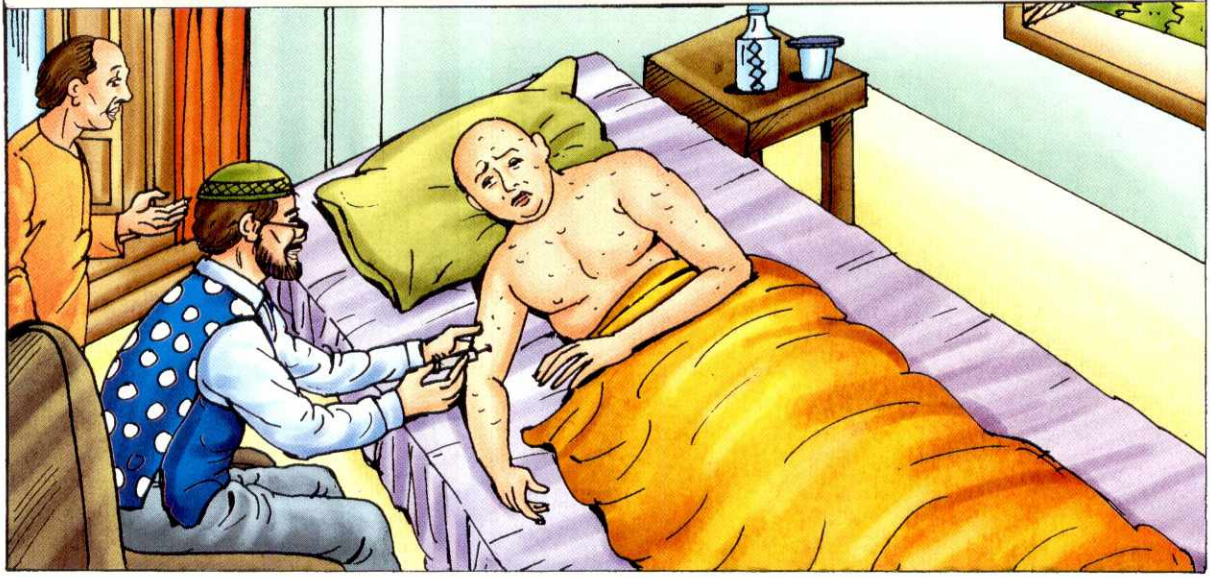

स्वामीजी के पूरे शरीर से ज़हर फूटने लगा अंततः रसोइये को अपनी गलती महसूस हुई, उसने स्वामीजी के पास जाकर माफ़ी माँगी और कहा—

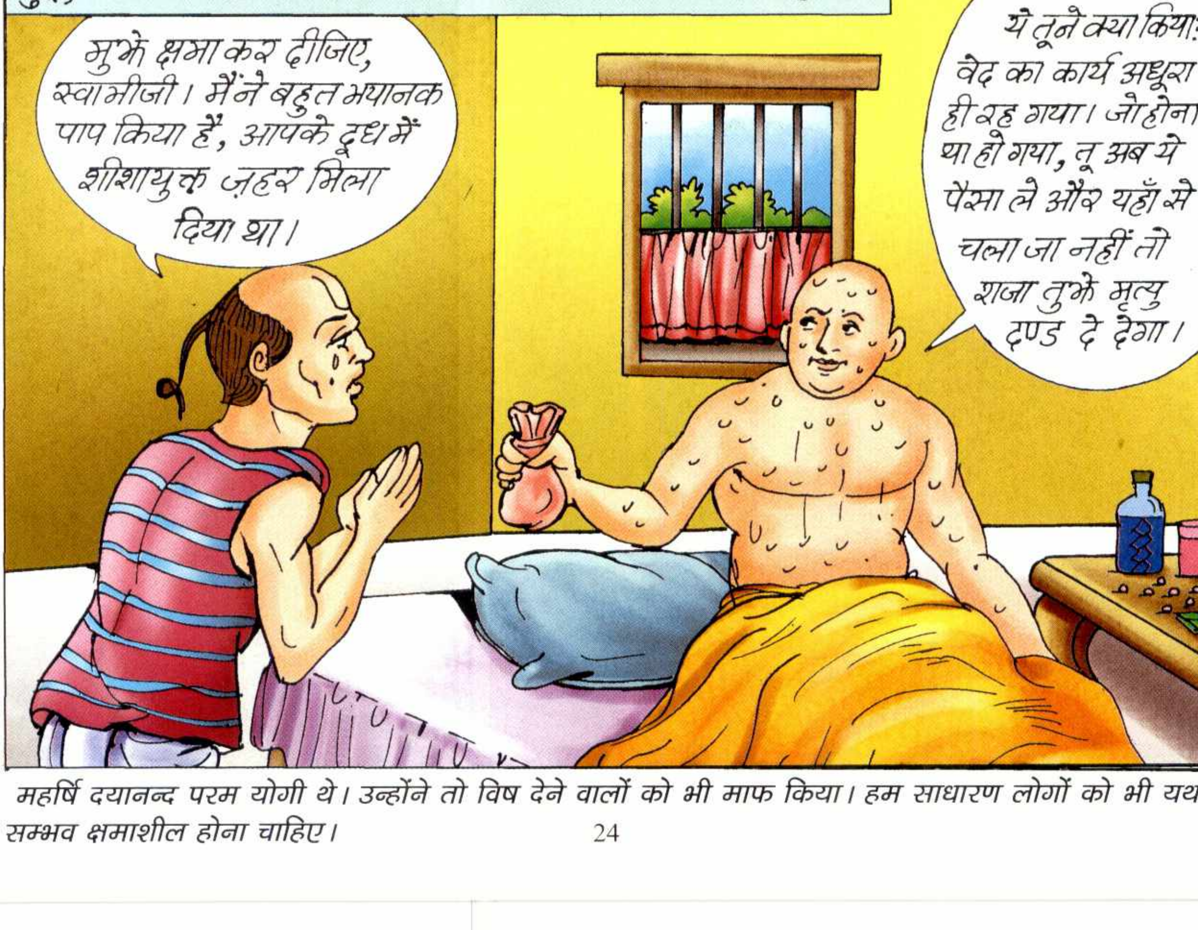

महर्षि दयानन्द परम योगी थे। उन्होंने तो विष देने वालों को भी माफ किया। हम साधारण लोगों को भी यथा सम्भव क्षमाशील होना चाहिए।

पटकथा-संवाद-चित्रांकन
भारत मकवाणा

मनुष्य की मनुष्यता

एक दिन दो उच्चराज-कर्मचारी स्वामीजी से मिलने उनके निवास स्थान पर आये, और कहने लगे—

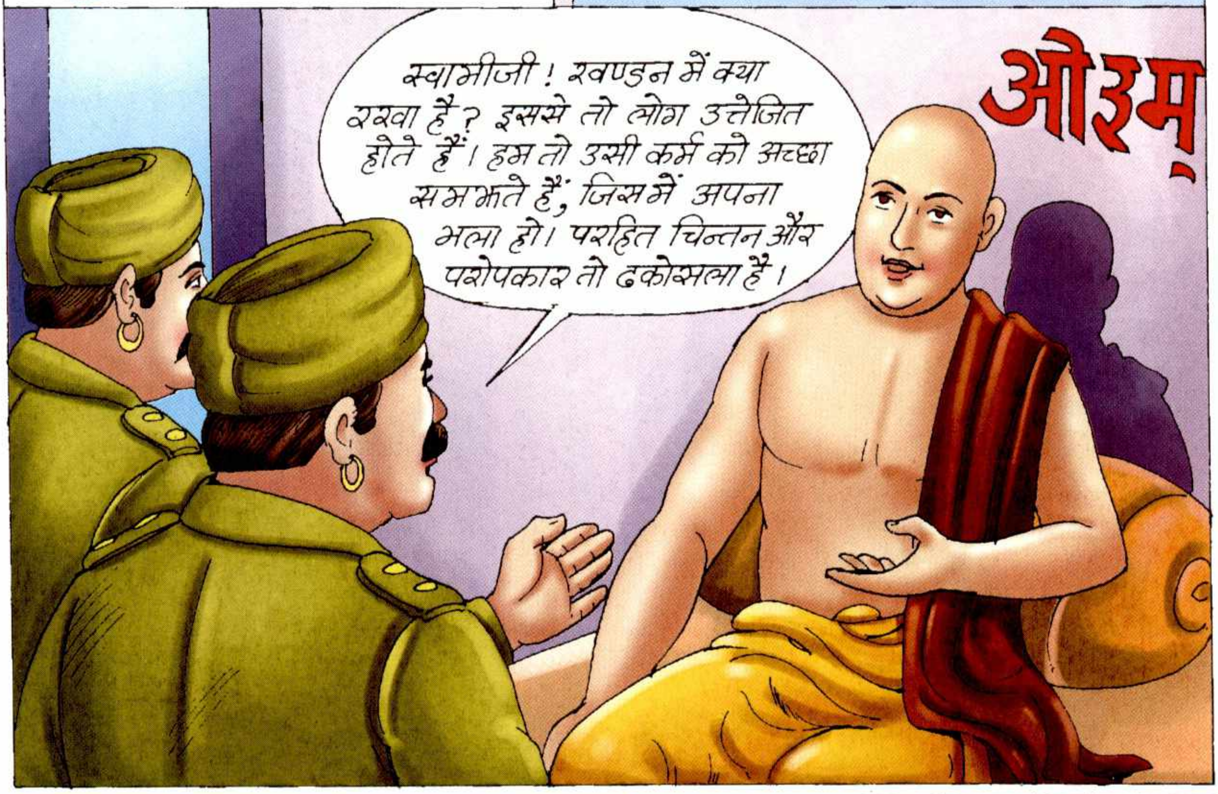

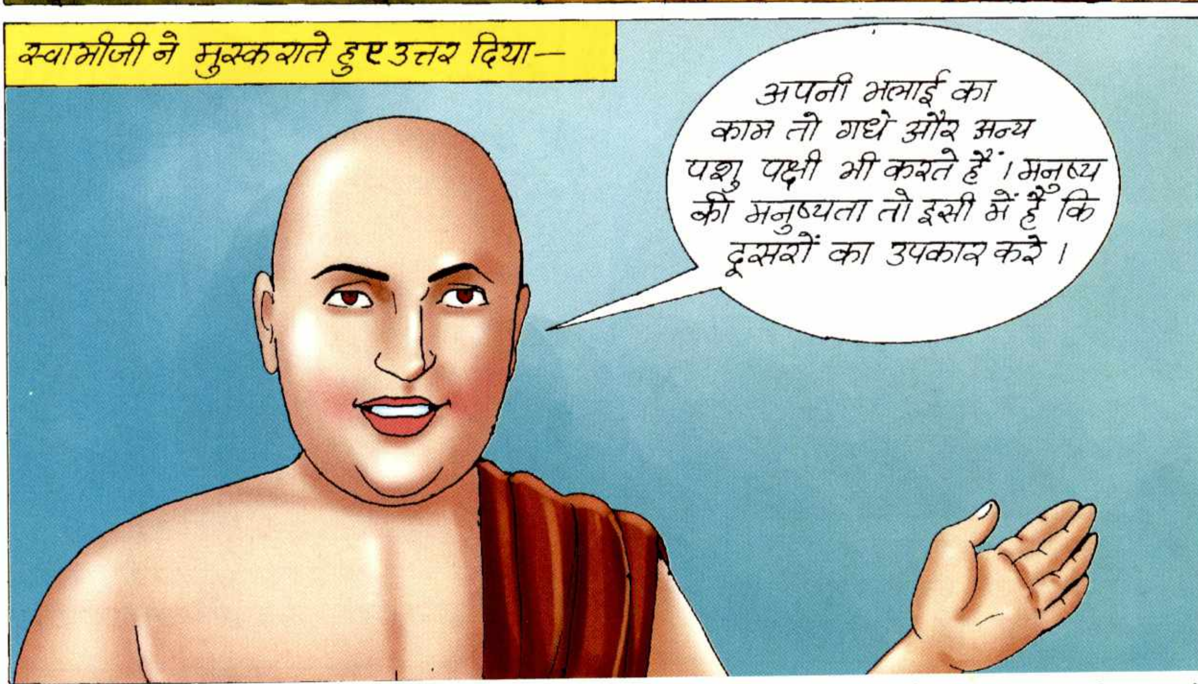

बच्चों! दूसरों की भलाई करने और सब जीवों को सुख पहुँचाने से ही हमें सच्चा सुख मिलता है, यही मनुष्यपन है।

देवियों को कभी किसी को गुरु बनाकर उसकी सेवा नहीं करनी चाहिए। घर परिवार के काम करते हुए गायत्री जाप और वेद शास्त्रों का स्वाध्याय करें, अपना जीवन पवित्र बनाएँ।

पटकथा- संवाद- चित्रांकन
भारत मकवाना

ईसाई और पुनर्जन्म

बच्चों ! पुनर्जन्म एक परम सत्य है। अपने किये कर्मों के फल हमें इस जन्म में और अगले जन्म में भी जरूर भोगने पड़ते हैं। इसलिए पुनर्जन्म को याद रखकर हम कभी गलत काम न करें।

ईश्वर–मिलाप का उपाय

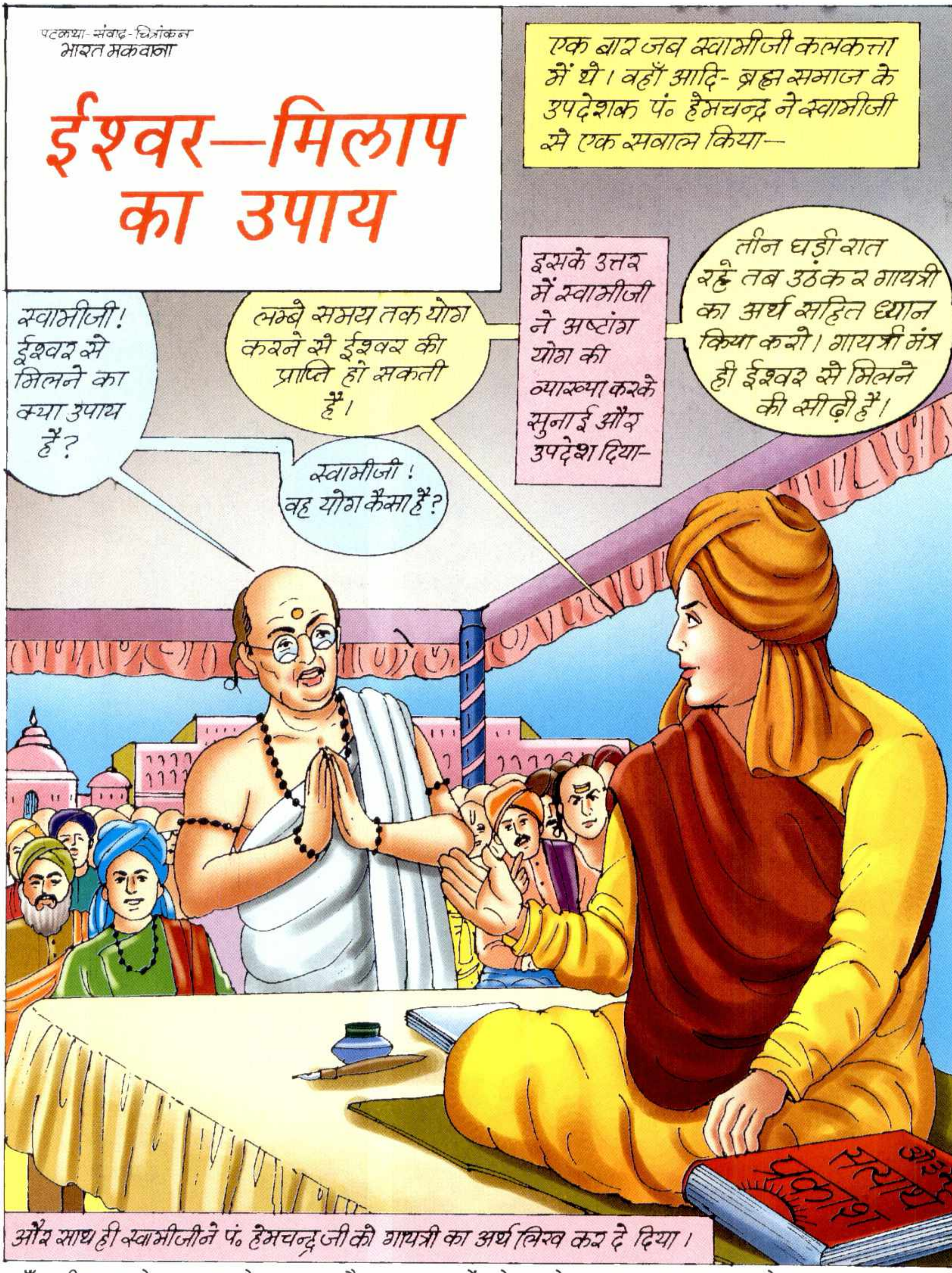

ऊँच–नीच का भेदभाव सबसे बड़ा पाप है। सब मनुष्यों को अपने समान समझकर सबको अपना बनाना आज का सबसे बड़ा पुण्य और धर्म है।

महर्षि दयानन्द जी के विषय में विभिन्न महापुरुषों के विचार

1. महर्षि दयानन्द स्वराज्य के सर्वप्रथम सन्देशवाहक तथा मानवता के उपासक थे। - लोकमान्य तिलक

2. मैंने सत्यार्थ प्रकाश पढ़ा और उससे मेरे जीवन का लक्ष्य बदल गया। आर्य समाज के सिद्धांत सार्वभौमिक हैं। उन्हें हराने की किसी में शक्ति नहीं है। - हुतात्मा रामप्रसाद बिस्मिल

3. स्वामी दयानन्द के विषय में मेरा मन्तव्य यह है कि वह हिन्दुस्तान के आधुनिक ऋषियों, सुधारकों और श्रेष्ठ पुरूषों में अग्रणी थे। उनका ब्रह्मचर्य, समाज सुधार, स्वातन्त्र्य स्वराज्य,सर्वप्रतिप्रेम, कार्यकुशलता आदि गुण लोगों को मुग्ध करते थे। -महात्मा गांधी

4. स्वामी दयानन्द के जीवन में सत्य की खोज दिखाई देती है,इसलिए वे केवल आर्य समाजियों के लिये नहीं अपितु समग्र संसार के लिए पूजनीय हैं। - कस्तूरबा गांधी

5. महर्षि दयानन्द सरस्वती उन महापुरूषों में से थे, जिन्होंने आधुनिक भारत का विकास किया जो उसके आचार सम्बंधी पुनरुत्थान तथा धार्मिक पुनरुत्थान के उत्तरदाता हैं। हिन्दू समाज का उद्धार करने में आर्य समाज का बहुत बड़ा हाथ है। संगठन, कार्य-दृढ़ता, उत्साह और समन्वयपालकता की दृष्टि से आर्य समाज की समता कोई और समाज नहीं कर सकता। - नेताजी सुभाषचन्द्र बोस

6. स्वामी दयानन्द संस्कृत के बड़े विद्वान् और वेदों के बहुत बड़े समर्थक थे। उत्तम विद्वान् के अतिरिक्त साधु स्वभाव के व्यक्ति थे। उनके अनुयायी उनको देवता मानते थे और बेशक वे इसी लायक थे। हमसे स्वामी दयानन्द की बहुत मुलाकात थी। हमेशा इनका निहायत आदर करते थे। वह ऐसे व्यक्ति थे, जिनकी उपमा इस वक्त हिन्दुस्तान में नहीं है। - महर्षि के समकालीन-सर सैयद अहमद खाँ, (अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के संस्थापक)

7. मैंने स्वराज्य शब्द सर्वप्रथम महर्षि दयानन्द के ग्रन्थों से सीखा। - दादाभाई नौरोजी

8. स्वामी दयानन्द स्वाधीनता संग्राम के सर्वप्रथम योद्धा और हिन्दू जाति के रक्षक थे। - महान क्रान्तिकारी वीर सावरकर

9. स्वामी दयानन्द जी का सबसे बडा योगदान यह था कि उन्होंने देश को किंकर्त्तव्यविमूढ़ता के गहरे गड्ढे में गिरने से बचाया। उन्होंने भारत की स्वाधीनता की वास्तविक नींव डाली। - लौहपुरुष सरदार बल्लभभाई पटेल

10. महर्षि दयानन्द ने राजनैतिक, धार्मिक और सांस्कृतिक उद्धार का बीड़ा उठाया। स्वामी जी ने जो स्वराज्य का पहला सन्देश हमें दिया उसकी रक्षा हमें करनी है। उनके उपदेश सूर्य के समान प्रभावशाली हैं। - सर्वपल्ली डॉ० राधाकृष्णन

11. गांधी राष्ट्रपिता हैं तो दयानन्द राष्ट्रपितामह हैं। - प्रथम लोकसभा अध्यक्ष, डॉ०श्री अनन्तशयनम् आयंगर

12. मेरा सादर प्रणाम हो उस महान् गुरू दयानन्द को जिन्होंने भारत वर्ष को अविद्या, आलस्य और प्राचीन ऐतिहासिक तत्त्व के अज्ञान से मुक्तकर सत्य और पवित्रता की जागृति में ला खड़ा किया, उसे मेरा बारम्बार प्रणाम। - रविन्द्र नाथ टैगोर

हमारे अन्य प्रेरक कॉमिक्स

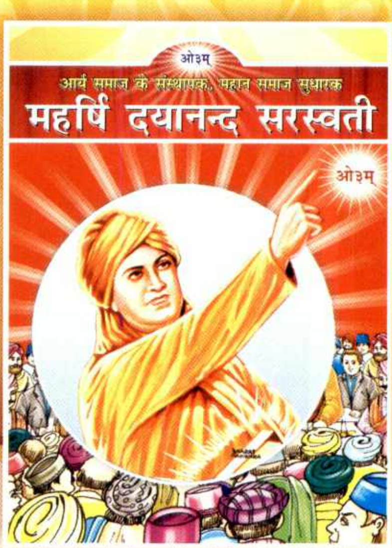

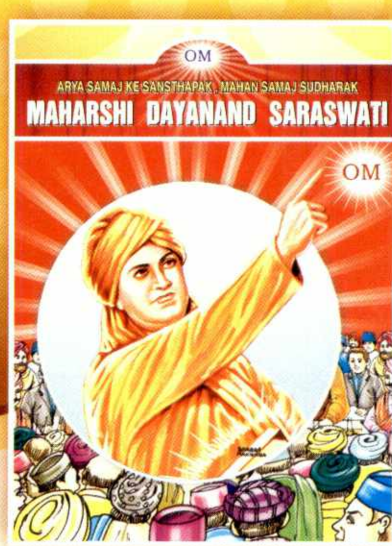

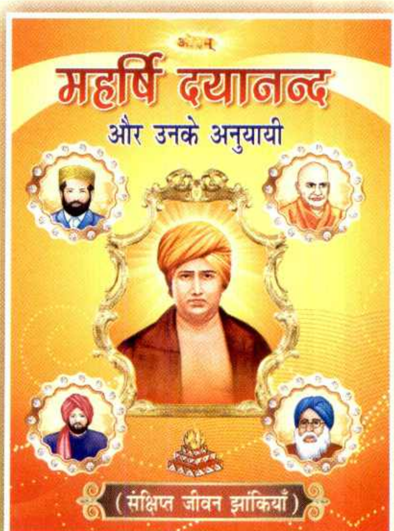

प्रकाशक-वितरक

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट

427, गली मन्दिर वाली, नया बांस, दिल्ली-110006
फोन-011-43781191

प्राप्ति स्थान

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

15, हनुमान रोड़, नई दिल्ली-1 फोन न. 011-23360150]23365959
email:aryasabha@yahoo.com website:delhisabha.com

प्रचारार्थ मूल्य : 25/- मात्र